पत्र सूचना कार्यालय (रक्षा विंग)
भारत सरकार
****
'हर काम देश के नाम'

नई दिल्लीः आश्विन 21,1944
बृहस्पतिवारः13 अक्तूबर 2022

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने रक्षा अताशे को भारत और मित्र देशों के आपसी रक्षा सहयोग सेतु के रूप में वर्णित किया

उनसे 'आत्मनिर्भर भारत' के अंतर्गत भारतीय रक्षा उत्पादन क्षमताओं को बढ़ावा देने का आग्रह किया

रक्षा मंत्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा कि रक्षा अताशे (डीए) आपसी रक्षा सहयोग के लिए भारत और मित्र देशों के बीच सेतु हैं। उनसे आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत भारतीय रक्षा उत्पादन क्षमताओं को बढ़ावा देने और भारतीय रक्षा उत्पादन क्षेत्र में होने वाले तकनीकी नवाचारों को समझने तथाउनके प्रमाणन के देशके सार्वजनिक और निजी दोनों में इन्हें प्रदर्शित करने और बढ़ावा देने के लिएआग्रह किया। वह 13 अक्तूबर 2022 को नई दिल्ली में आयोजित चौथे रक्षा अताशे के दो दिवसीय सम्मेलन में उद्घाटन भाषण दे रहे थे।

रक्षा अताशे के प्रदर्शन की सराहना करते हुए, रक्षा मंत्री ने कहा कि रक्षा अताशे विदेश नीति के अनुरूप राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करने, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने और सशस्त्र सेनाओं की क्षमताओं और तैयारियों को बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उन्होंने उनसे आत्मनिर्भरता हासिल करने की सरकार की परिकल्पना को आगे बढ़ाने का आग्रह किया और इसे लगातार विकसित हो रहे वैश्विक सुरक्षा परिदृश्य के बीच वैश्विक स्तर पर भारत को मजबूत और सम्मानित बनाने का एकमात्र तरीका बताया। हालांकि, उन्होंने कहा कि 'आत्मनिर्भरता' का मतलब बाकी दुनिया से अलग-थलग पड़ना नहीं है, बल्कि आधुनिक सेना के माध्यम से राष्ट्रीय सुरक्षा और रणनीतिक स्वायत्तता सुनिश्चित करना है।

इस बात पर जोर देते हुए कि भारत को आयात पर भरोसा नहीं करना चाहिए और न ही निर्भर रहना चाहिए, श्री राजनाथ सिंह ने भविष्य की सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए तैयार रहने हेतु रक्षा विनिर्माण में आत्मनिर्भरता

हासिल करने के लिए सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने रक्षा अताशे को रक्षा में 'आत्मनिर्भरता' का अग्रदूत बताया।

रक्षा मंत्री ने निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करने सहित आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए रक्षा मंत्रालय द्वारा उठाए गए कदमों को सूचीबद्ध किया; सकारात्मक स्वदेशीकरण सूचियां जारी करना; उत्तर प्रदेश और तमिलनाडु में रक्षा गलियारों की स्थापना; नई उत्पादन और निर्यात नीतियों को लागू करना; नवाचार को बढ़ावा देना और एफडीआई सीमा बढ़ाना आदि शामिल हैं। उन्होंने कहा कि रक्षा अताशे विभिन्न देशों में इन निर्णयों के बारे में जागरूकता बढ़ाकर भारत में निवेश ला सकते हैं। उन्होंने रक्षा अताशे को सेतु बताते हुए इस बात पर जोर दिया कि वे अपने संबंधित देशों के साथ संपर्क कर सकते हैं और दोनों पक्षों की आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद कर सकते हैं।

श्री राजनाथ सिंह ने कहा, "भारत विश्व स्तरीय और लागत प्रभावी हथियारों, उपकरणों और प्लेटफार्मों का निर्माण कर रहा है, जिन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता दी जा रही है। हमारे रक्षा उत्पाद न केवल विश्व स्तरीय और गुणवत्ता में विश्वसनीय हैं, बल्कि अपेक्षाकृत किफायती भी हैं।"

.

दो दिवसीय सम्मेलन में अलग-अलग विनिर्देशन/ब्रीफिंग सत्र होंगे, जिसमें सेवाओं के प्रमुख, विदेश सचिव और रक्षा मंत्रालय के अन्य गणमान्य व्यक्ति रक्षा सहयोग से संबंधित विभिन्न राजनयिक, रणनीतिक और कार्यात्मक मुद्दों पर रक्षा अताशे सम्मेलन को संबोधित करेंगे।

इस सम्मेलन के बाद रक्षा अताशे गुजरात के गांधीनगरमें 17 अक्तूबर से शुरू हो रहे डेफएक्सपो-22 में भाग लेने वाले मित्र देशों के प्रतिनिधिमंडल के साथ होंगे।

एबीबी/डीएस